दादी माँ की कहानियाँ

म.क. रैना

Image Courtesy :
studentshow.com

Grandma's Stories
दादी माँ की कहानियां - नानि हुंज़ु कथु

[Content Source: käshír talmíh & käshír lúkû kathû ~ Publications of J&K Academy of Art, Culture & Languages. Transliteration & Re-written for Children by M.K.Raina]

Note : Main aim of this work is to bring old Classic Kashmiri literature closer to our younger generations. Stories reproduced in Kashmiri language here are written in Devanagari-Kashmiri Script to reach those Kashmiri Pandits who are not well versed with the Nastaliq Script. It may be noted here that J&K Academy's works are already in Nastaliq Script and need not be reproduced again in that script.

- M.K.Raina

सच्चा दोस्त

रोज़ की तरह बच्चे शाम को अपनी दादी माँ जिसे वह प्यार से काकन्य जिगुर कहते थे, के पास आकर बैठ गये और उन्हें कहानी सुनाने का आग्रह किया। दादी माँ भी तैयार ही थी। आज की कहानी हिंदी में थी। बच्चे आमने सामने बैठ गये और दादी माँ शुरू हो गई। 'सुनो बच्चो, आज जो कहानी मैं आप को सुनाने जा रही हूँ उस का नाम है सच्चा दोस्त। ध्यान से सुनो।'

दपान, एक राजकुमार था। उसकी दोस्ती एक सुनार के लडके के साथ हो गयी। राजकुमार हर दिन अपने दोस्त से मिलने उसकी दुकान पर जाता था और दोनों एक दूसरे से घंटों बातें करते। शाम होते ही राजकुमार वापस महल में आ जाता था। जब राजा को उनकी दोस्ती के बारे में पता चला तो वह आग बबूला हो गया। उसने सुनार के लडके को फांसी देने के लिये हुक्म दे दिया।

'फांसी ?' बच्चों की चीख निकल गई।

'हाँ, फाँसी।' दादी ने कहा 'आगे सुनो।'

राजा का एक वज़ीर बहुत चालाक था। उसने राजा को बताया, 'जहां पनाह! यह ठीक नहीं होगा। आज न कल लोगों को पता चलेगा और आप की बदनामी होगी। इस लडके को हटाने के लिये कोई और रास्ता ढूंढना पडेगा।'

राजा ने वज़ीर की बात मान ली। उसने वज़ीर से कहा, 'ठीक है। आप को जो मुनासिब लगता है वह करें। मगर यह लडका मुझे कल से दिखाई नहीं देना चाहिये।' वज़ीर ने कहा, 'आप चिंता न करें। समय आने पर बता दूंगा।'

कुछ दिन बाद राजा ने सुनार लडके को खाने पर बुलाया।

लडका खुश हुआ। राजकुमार भी खुश हुआ। राजा ने सुनार लडके को बहुत अछी दावत खिलायी।

राजा ने उसे इनाम भी दिया। जाने पर वज़ीर ने लडके को एक सुंदर घोडे पर बिठा दिया। लडके ने ज़ीन पकड ली और घौडा भागने लगा।

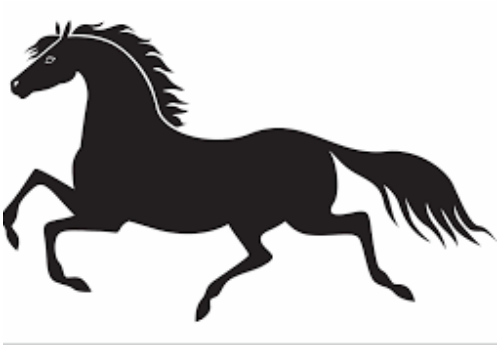

'यह तो बहुत अच्छा हुआ।' बिल्लू ने कहा।

'अच्छा नहीं हुआ, आगे की कहानी सुनो।' दादी माँ बोली।

कुछ पल में ही घौडा आसमान से बातें करने लगा। सुनार लडका ज़ीन खींच रहा था लेकिन घौडा रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। वह सरपट जंगल की तरफ भाग रहा था। लडके की समझ में आया कि घौडे को शराब पिलाई गई है और उसके मारने का इन्तिज़ाम कर दिया गया है।

जंगल में पहुंचते ही लडके के दिमाग में एक तरकीब आ गई। जहाँ से घौडा जा रहा था, वहाँ रास्ते में बहुत से बडे बडे पेड थे जिन की शाखें इधर उधर लटक रही थीं। लडके ने एक बडी शाख को पकड लिया और घौडा उसे छोड कर तीर की तरह आगे निकल गया। अंधेरा हो चुका था। वापस जाने को रास्ता सुनार लडके को मालूम न था। ज़मीन पर बैठता तो रात में जंगली जानवर उसे खा जाते। लडके ने उसी पेड के ऊपर रात काटने का फैसला कर लिया।

'उसे डर नहीं लगा ?' कल्हन ने घबराकर पूछा।

'डर लगा होगा पर लडके ने हिम्मत की।'

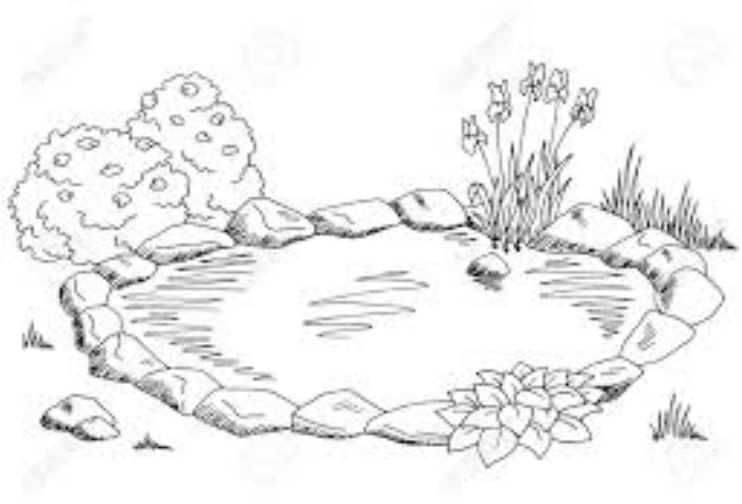

अभी कुछ समय ही हुआ था कि सामने के तालाब में से एक आदमी बाहर निकला और पेड के सामने की जगह को झाडू से साफ कर दिया। उसके जाने के बाद दूसरा आदमी आया और उसने साफ की हुई जगह पर कालीन डाल दिया। वह आदमी भी तालाब में वापस चला गया। कुछ देर बाद मानो ज़मीन हिल गई। एक बहुत बडा देव तालाब से बाहर आया और कालीन पर बैठ गया। उसने इधर उधर देखा, जेब से एक डिबिया निकाली और उसे खोल कर उसमें से एक छोटा

पत्थर निकाला। पत्थर पर ज़ोर से फूंक मारी ओर वह पत्थर एक सुंदर परी में तबदील हो गया। परी देव के सामने नाचने लगी। देव परी का नाच देखता

रहा। कुछ देर बाद देव को नींद आने लगी। उसने परी को इशारा किया और परी ने नीचे बैठ कर देव का सर अपनी टांगों पर रख लिया। देव गहरी नींद सो गया। सुबह मिर्गे की बांग के साथ ही वह परी फिर से पत्थर बन गई। देव ने उसे वापस डिबिया में रख लिया और तालाब के अंदर चला गया।

सुनार लडका पेड से उतर कर भागने लगा। उसको घर पहुंचने में दो दिन लगे। उसके माता पिता समझ गये कि वह राजा के महल से आ रहा है। वह उसे चूमने और प्यार करने लगे। लडके ने उन्हें कुछ न बताया।

दूसरे दिन जब सुनार लडका अपनी दुकान पर गया तो राजकुमार उसका बे-सब्री से इन्तिज़ार कर रहा था। सुनार लडके ने राजकुमार से कोई बात न की। वह समझ रहा था कि राजकुमार भी उसको मारने के षडयंत्र में शामिल था। राजकुमार से रहा न गया। उसने सुनार लडके को कसम दी कि वह सच सच उसको सब बतादे। लडके ने पूरी कहानी सुनाई। कहानी सुन कर राजकुमार को बहुत दुख हुआ पर उसके मन में सुंदर परी को देखने की लालसा भी हो गई। उसने सुनार लडके को एक बार वापस जंगल में जाने के लिए तैयार कर लिया। यह वादा भी किया कि वह वज़ीर से उसकि करनी का बदला ज़रूर लेगा।

राजकुमार और सुनार लडका जंगल में पहुंच कर एक बडी झाडी के पीछे छिप गये। अंधेरा हो गया और वही बात फिर हो गई। एक आदमी आया और जगह साफ की। दूसरे ने आकर कालीन डाल दिया। फिर देव निकला और पत्थर को फूंक मार कर उसे परी में तबदील कर दिया। परी नाचती रही जब तक देव को नींद आ गई। परी ने उस का सर अपनी टांगों पर रख लिया।

उधर राजकुमार सुनार लडके को मना रहा था कि वह उसकी मुलाकात परी से करा दे। जब राजकुमार किसी तरह न माना तो सुनार लडके ने हाँ कर दी। वह धीरे धीरे परी के पास गया। परी उसे देख कर हैरान हो गई। सुनार लडका उसको राजकुमार से मिलने के लिये कह रहा था। परी मान गई और सुनार लडके ने देव का सर अपनी टांगों पर रख दिया। परी राजकुमार से मिलने झाडी के पीछे चली गई। बहुत समय बीत गया। परी वापस नहीं आयी। मुर्गे ना बांग दी और देव जाग गया। परी की जगह किसी लडके को देख कर उसे गुस्सा आया। देव ने पूछा, 'तुम यहाँ कैसे और परी कहाँ है?' लडके ने कहा, 'हज़ूर, मैं यहाँ से गुज़र रहा था। परी यहाँ बैठ कर बहुत थक गई थी। उसने मुझ से विनती की कि मैं थोडी देर यहाँ बैठूं ताकि वह कुछ सुसता ले। मैं मान गया और वह उठ कर कहाँ चली गई, मुझे कुछ मालूम नहीं।'

देव को फिर गुस्सा आया। उसने कहा, 'उसकी इतनी हिम्मत? मैं देखता हूं।' यह कह कर देव ने अपने सर का एक बाल नोच लिया और उसे ज़मीन पर फेंक दिया। परी और राजकुमार तुरंत ही सामने पैदा हो गये। देव ने सब को एक दूसरे से बांद दिया और खुद तालाब में छलांग लगा दी। कुछ ही पल में वह हाथों में एक डरावने जानवर को पकड कर लाया। वह जानवर दो इनसानों को देख कर मचल उठा और उन्हें खाने के लिये आगे बडा। सुनार लडके ने देव से कहा, 'यह सब मेरी गलती है। आप इस राजकुमार को बख्श दें और मुझे उस जानवर को खाने के लिये दे दें। मै आप के पाँव पडता हूँ।' इस के साथ ही सुनार

लडका ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। देव ने पूछा, 'यह राजकुमार कौन है और तुम उसको बचाने की कौशिश क्यों कर रहे हो?' सुनार लडके ने कहा, 'वह मेरा दोस्त है।' इसके साथ ही उसने देव को अपनी पूरी कहानी सुनाई।

दपान, कहानी सुन कर देव को सुनार लडके पर तरस आया। उसने कहा, 'तुम सच्चे दोस्त हो। मैं तुम दोनों को बख्श देता हूं। यह परी भी अब मेरे काम की नहीं है क्योंकि इस ने इनसान को छुआ है। तुम इसको भी अपने साथ ले जा सकते हो।' यह कह कर देव गायब हो गया और राजकुमार और उसके साथी महल में वापस आ गये। महल पहुँच कर राजकुमार ने राजा को वज़ीर की कहानी सुनाई और उसको दंड दिलवा दिया।

'लेकिन राजा ने स्वयं ही तो लडके को मारने के लिये कहा था। उसने वज़ीर को दंड क्यों दिया?' पिंकी ने दादी से पूछा।

'क्योंकि राजा राजा होता है। उसे कोई दंड नहीं दे सकता। आज कल की दुनिया में भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। हकूमत करने वाला कुछ भी गलती करे, सज़ा छोटे लोगों को होती है। यही दस्तूर है। लेकिन तुम बच्चे हो, अभी नहीं समझोगे।' दादी की आँखें भी भर आ गईं।

'कहानी खत्म हो गई। जाओ अब सो जाओ।' दादी ने कहा और बच्चे उठ कर चल दिये, दूसरे दिन फिर आने के लिये।

Copyright: M.K.Raina